

21<sup>10</sup>/<sub>2020</sub> पत्रावली पेश हुई पीठारीन अधिकारीजं  
विभागात्कल्ले। जन्मकार्य  
में व्यस्त होने से पत्रावली पूर्व आदेश की पालना  
में दिनांक 14.12.2020 को पेश हो।  
१०

14<sup>12</sup>/<sub>2020</sub> पत्रावली पेश हुई। अधिवक्ता  
पक्षाकारानु जनुपरिचित है न्याय  
हित में उपस्थित होने हेतु  
एक ठाकरा दिपा जाता है।  
पत्रावली दिनांक 23.12.2020  
की पेश हो।

23<sup>12</sup>/<sub>2020</sub> पत्रावली पेश हुई। अधिवक्ता जर्जी  
उपाधीत है। ति. सं. ① से ⑩ तक को  
उपाधीत समप में कर-कार  
अपने लक्ष्य गरी पत्रावली  
स्वयं मा इतरी और से अधिवक्ता  
कोई उपाधीत रही हुए तब इतरे  
विश्व एउ वहीप कारवाही से  
जाती है। अधिवक्ता जर्जी की  
करक रुकी गयी। पत्रावली  
बाले आदेश दिनांक 24.12.2020  
को पेश हो।

24<sup>12</sup>/<sub>2020</sub> पत्रावली पेश हुई। अधिवक्ता जर्जी  
उपाधीत है। अधिवक्ता जर्जी की  
करक पर मतत वहीप एउ  
पत्रावली का अवलोकन दिपा  
गया। अधिवक्ता जर्जी को  
उपाधीत पत्रा से संक्षिप्त  
तबको से दोहराने हुए



सहायक कलक्टर  
(एस डी ओ) कुम्भलगढ  
जिला - राजसमन्द

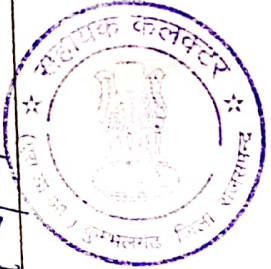
यालय उपखण्ड अधिकारी, कुम्भलगढ़ जिला-राजसमन्द

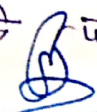
65 सन् 2020 किरम मुकदमा उत्पत्ति नम्बर

रील बनाव देवा वगैरह

आदेशिका	हस्ताक्षर / सूचना
---------	-------------------

अपनी बरक से बताया कि ग्राम साविपा की जमावती संख्या 20 69-72 के खाता संख्या 16 डिता-10 रकबा 6-12-10 बीघा भूमि पर उत्पत्ति व उत्पत्ति के अर्थों व नाम के नाम पर राजस्व इकाई में दर्ज है। उत्पत्ति की मात्रा वगैरह की हक से चुकी है व उत्पत्ति के अर्थ कालु व रामा उत्पत्ति वादित हो पर 30-35 वर्षों से लापता है तथा जितने होने या न होने के कोई समझौता नहीं है। उक्त भूमि पर उत्पत्ति का ही हक अधिकार है विपक्षीयता की कोई हक अधिकार नहीं है। जिससे सम्बन्ध में सहायक निष्पत्ति का बाद प्रस्ताव कर रखा है जिससे निष्पत्ति में समझौता होगा। तब तक विपक्षीयता बाद प्रस्ताव भूमि पर अवकाश नहीं रहे। उक्त भूमि पर कब्जा अधिकार नहीं रहे इस आशय की विपक्षीयता के विरुद्ध मूल वाद है निष्पत्ति तब अस्मात् निष्पत्ति जाती थी जहाँ/वहाँ पर मन्त व पत्रावली के अवलोकन से सिद्ध है कि उक्त वाद प्रस्ताव भूमि उत्पत्ति व उत्पत्ति मात्रा व अर्थों के नाम के खतरातेदारी में दर्ज है। विपक्षीयता के विरुद्ध अस्मात् निष्पत्ति जाती थी जहाँ न्यायोचित प्रतीत होती है। अतः मूल वाद है निष्पत्ति तब उत्पत्ति व पत्रावली के विरुद्ध विपक्षीयता के इस आशय की अस्मात् निष्पत्ति जाती थी जहाँ/वहाँ कि मॉडर्न की पश्चात्कालीन वगैरह रहे। पत्रावली केवल शुद्ध हो पर नस्बत का काम हो। निर्णय सुले पापालप में सुनाया गया।



  
सहायक कलेक्टर  
(एस.डी.ओ.) कुम्भलगढ़  
जिला-राजसमन्द